



श्रृंखला: 10वीं कक्षा (10वीं कक्षा)

पाठ 9: स्वतंत्रता संग्राम में पंजाब का योगदान

क) निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक शब्द/वाक्यांश (1-15 शब्द) में दीजिए:-

1857 ई. के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान पंजाब की किन छावनियों ने विद्रोह किया ?

उत्तर: 1857 ई. के युद्ध के दौरान पंजाब के जालंधर, फिल्लौर, फजलम, फसलकोट, थानेसर, लाहौर, फिरोजपुर, फपसावर पर कब्जा कर लिया गया।

और मियांवाली अफाद छावनियों में विद्रोह हो गया।

2. सरदार अहमद खान खिल ने स्वतंत्रता संग्राम में क्या भूमिका निभाई?

उत्तर: जब अंग्रेजों ने राजस्व नहीं दिया, तो खरल जनजाति के मुखिया अहमद खान खरल ने विद्रोह कर दिया। उन्होंने कई जगहों पर अंग्रेजों से संघर्ष किया और अंततः पाकपट्टन के पास शहीद हो गए।

3. श्री शक्तिगुरु रामकसंघ जी ने ब्रिटिश सरकार के प्रति अनादर की भावना किस प्रकार प्रदर्शित की?

उत्तर: सारी सफागुरू राम संघ जी ने विदेशी सरकारों, विदेशी संस्थाओं और विदेशी वस्तुओं का विरोध करके असहयोग की भावना दिखाई।

4. ग़दर कहाँ किन परिस्थितियों में अस्तित्व में आया?

उत्तर: ग़दर आंदोलन सशस्त्र विद्रोह के माध्यम से भारत को आज़ाद कराने के लिए अस्तित्व में आया।

5. मानव लहर के उद्भव के दो कारण बताइए।

उत्तर- 1 गुरुद्वारों को महंतों से मुक्त करना।

2. गुरुद्वारों के प्रबंधन में सुधार लाना।

6. चाबियों वाला सामने वाला हिस्सा ऊपर क्यों आया?

उत्तर: ब्रिटिश सरकार ने सम्राट मूर्तदा के महल की चाबियाँ अपने पास रख ली थीं और सिखों ने उन्हें वापस पाने के लिए चाबियाँ लेकर मार्च निकाला।

7. गुरु बाग मोर्चा का नाम क्या है?

उत्तर: सिखों ने गुरु का बाग नहीं लिया। 8. महंत सुंदर दास को उनके अत्याचार से मुक्त कराने के लिए गोरखा बाग मोर्चा का आयोजन किया गया था।

साइमन कमीशन भारत से आया था और उसने यह शपथ क्यों ली थी?

उत्तर- साइमन कॉफ़मैन 1928 में भारत आये थे। इसमें एक भी भारतीय सदस्य मौजूद नहीं था, जिसके कारण भारत में इसका विरोध हुआ।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 30-50 शब्दों में लिखें:

1. श्री शक्तिगुरु रामकासंग जी की किन गतिविधियों से अंग्रेज भयभीत थे?

उत्तर:- 1. सारी सफ़तगुरु राम फासंग जी जहाँ भी जाते, उनके साथ घुड़सवारों का एक दल भी होता था। इससे ब्रिटिश सरकार को धीरे-धीरे समझ में आ गया कि नामधारी किसी विद्रोह की तैयारी कर रहे हैं।

2. अंग्रेजों ने भी उनकी डाक प्रणाली से सीखा।

3. सफागुरु राम संघ जी ने अपने विचारों के प्रचार के लिए पंजाब को 22 प्रांतों में विभाजित कर दिया। इससे अंग्रेज भयभीत हो गए।

4. नामधारियों ने कश्मीर के शासकों के साथ अपने संबंध स्थापित किए। उन्होंने काफकाओं को सैन्य प्रशिक्षण देना शुरू किया।

इस तरह अंग्रेजों को यकीन हो गया कि नामधारी उनके खिलाफ आंदोलन की तैयारी कर रहे हैं।

2. मालरोतला में भारतीयों और अंग्रेजों के बीच हुई घटना का वर्णन कीजिए।

उत्तर: नामधारी सिखों ने गोहत्या का काम शुरू किया। वे गायों का वध भी करते थे और वध करने वालों को मार डालते थे। 1871 ई. में उन्होंने अमृतसर के रायकोट स्थित कसाईखाने पर हमला किया और कई वध करने वालों को मार डाला। जनवरी 1872

150 काफका मारे गए। ब्रिटिश सरकार ने काफकाओं के विरुद्ध उन्हें दण्ड देने के लिए मलेरकोटला भेजा गया। 15 जनवरी, 1872 को काफकाओं और मलेरकोटला के पूर्वी हिस्से के बीच भीषण युद्ध हुआ। इस युद्ध में कार्रवाई करने के लिए मलेरकोटला में सेना भेजी। जिसमें से 49 काफकाओं ने 17 जनवरी को और 16 काफकाओं ने 18 जनवरी को आत्मसमर्पण कर दिया।

जनवरी को तोपों से उड़ा दिया गया। सारी सफातगुर राम फसंग जी ने काली स्याही देकर देश को रंग भेजा।

3. पंजाब में आर्य समाज की रीति-रिवाजों का वर्णन कीजिए।

उत्तर- 1 उन्होंने पंजाब में स्वदेशी लहर को बढ़ावा दिया।

2. इसने लाला लाजपत राय, सरदार अजीत सिंह, भाई परमानंद, लाला हरफदल आफताब जैसे महान देशभक्तों को जन्म दिया।

3. उन्होंने पंजाब में शिक्षा का विस्तार किया और बड़ी संख्या में स्कूल और कॉलेज खोले।

4. इसने पंजाबियों में देशभक्ति की भावना जगाई।

4. ग़दर पार्टी ने किस पंजाब में स्वतंत्रता के लिए प्रयास किए?

उत्तर: रास फबारी बोस ने लाहौर, फिरोजपुर, मेरठ, अंबाला, मुल्तान, फपसवार और कई अन्य छावनियों में अपने प्रचारक भेजे। इन प्रचारकों ने सैफ़निकों को विद्रोह के लिए तैयार किया।

2. करतार संघ सराभा ने कपरथला के लाला रामसरन दास के साथ मिलकर गदर पर दबाव बनाने की कोशिश की, लेकिन असफल रहे। फिर भी, उन्होंने गदर जारी रखा।

3. करतार संघ सराभा ने फरवरी 1915 में फिरोजपुर में सशस्त्र विद्रोह शुरू करने का प्रयास किया, लेकिन फकरपाल संघ नामक एक षड्यंत्रकारी के विश्वासघात के कारण उसका रहस्य उजागर हो गया।

5. बाबा गुरुद्वारा संघ ने उन लोगों के लिए क्या किया जो उन्हें जानते थे?

उत्तर: पंजाबी लोग रोज़ी-रोटी की तलाश में कनाडा आ रहे थे। लेकिन कनाडा सरकार ने एक कानून बनाकर उन्हें रोक दिया। 1913 में, बाबा गुरुद्वारा संघ ने 'गुरु नानक नई यात्रा' नाम से एक कंपनी की स्थापना की। 24 मार्च, 1914 को उन्होंने कामागाटामर नामक एक जहाज़ किराए पर लिया और उसका नाम गुरु नानक जहाज़ रखा। इस जहाज़ में उन्होंने कनाडा जाने के इच्छुक लोगों को ले जाने की कोशिश की। लेकिन वहाँ पहुँचते ही उन्हें वापस लौटने का आदेश दिया गया।

6. क्या झालावांवाला बाग दुर्घटना के कोई गवाह थे?

उत्तर: 1. रौलेट एक्ट 9191 ई. - रौलेट एक्ट ब्रिटिश सरकार द्वारा राष्ट्रीय आंदोलन को दबाने के लिए पारित किया गया था। इसमें बिना किसी वारंट के गिरफ्तारी की जा सकती थी।

इसे पारित कर दिया गया। इसके अनुसार, किसी भी व्यक्ति को 2. डॉ. सतपाल

और डॉ. किचलू की गिरफ्तारी की अनुमति नहीं थी- रौलेट एक्ट के विरोध में पंजाब में कई जगहों पर हड़तालें हुईं। हिंसक घटनाएँ भी हुईं। इसलिए, सरकार ने पंजाब के दो प्रसिद्ध लोगों - डॉ. सतपाल और फगरिट को अमृतसर में गिरफ्तार कर लिया। इस पर लोगों का गुस्सा भड़क उठा।

डॉ. फकचल ना

3. अमृतसर में ब्रिटिश पुलिस ने लोगों पर गोलियां चलाईं। जवाबी कार्रवाई में लोगों ने पाँच अंग्रेजों को पकड़ लिया।

दिया गया। इसलिए, अमृतसर शहर का प्रशासन महानिदेशक को दिया गया। 7. सरदार उमर खान ने

जिला प्रशासन का नाम कैसे बदल दिया?

उत्तर: सरदार उधम संघ भारत के एक महान देशभक्त थे, जिन्होंने मातृभूमि के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। 1940 ई. में उन्होंने इंग्लैंड में सर माइकल ओ'डायर की हत्या कर दी, जो झालावांवाला बाग हत्याकांड के समय पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर थे। उधम संघ को मृत्युदंड की सजा सुनाई गई और 1940 ई. में उन्हें फांसी दे दी गई।

8. खिलाफत पर यह नोट लिखें।

उत्तर: जाफलावाले बाग की घटना के बाद मुस्लिम भाइयों में आज़ादी की चाहत और भी प्रबल हो गई। उन्होंने आज़ादी का झंडा बुलंद किया और 1920 ई. में उन्होंने पंजाब में अंग्रेजों को काम न करने देने का फैसला किया। पंजाबी नाज़ हुसैन और मौलवी दाउद ने ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ प्रतिरोध का नेतृत्व किया।

डॉ. फचल इस क्षेत्र में इस लहर का नेतृत्व कर रहे हैं।

नारा था "माफ़रा"। उन्होंने ब्रिटिश सरकार और तुर्की सुल्तान के अपने प्रति रवैये का भी विरोध किया।

9. कविता में बच्चों की गतिविधियों का संक्षेप में वर्णन करें।

उत्तर- बीबर अकालियों का जन्म गुरुद्वारे में बैठे महंतों और पुलिसकर्मियों से लड़ने के लिए हुआ था। उनका मुख्य उद्देश्य मुखबिरों और सरकारी एजेंटों को खत्म करना था। बीबर अकालियों का उद्देश्य अपने धर्म के दुश्मनों और ब्रिटिश शासन के समर्थकों को मारना था। वे इसे 'सुधार' कहते हैं। उन्हें हथियारों की सख्त जरूरत थी। उन्हें हथियार खरीदने के लिए पैसे चाहिए थे। उन्होंने पंजाबी सैनिकों से हथियारों के दम पर आजादी पाने की अपील की। उन्होंने 'बीबर अकाली दोआबा' नाम से एक अखबार भी शुरू किया। उन्होंने सरकार के कई समर्थकों को मार डाला। उन्होंने पंजाबियों को बलिदान और आजादी की खातिर अपनी जान जोखिम में डालने का पाठ पढ़ाया।

10. भारत के युवाओं पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर: सरदार भगत संघ, भगवती चरण वोहरा, सुखदेव अफद ने 1926 में लाहौर में 'नौजवान भारत सभा' की स्थापना की। भगत संघ स्वयं इसके महासचिव नियुक्त हुए। इस संगठन को कट्टरपंथी कांग्रेसियों का समर्थन प्राप्त था। यह संगठन शीघ्र ही क्रांतिकारियों का केंद्र बन गया।

इस संगठन का उद्देश्य युवाओं में ज्ञान का प्रसार करना था। यह संगठन बैठकें आयोजित करता था और मार्क्स और लेनिन के विचारों पर चर्चा करता था।

इसमें विचारों पर चर्चा होती थी। इस बैठक में दूसरे देशों में हुई क्रांतियों पर भी चर्चा होती थी।

11. साइमन कमीशन पर एक टिप्पणी लिखें।

उत्तर: 1928 ई. के आरंभ में ब्रिटिश सरकार ने एक आयोग नियुक्त किया। इसके अध्यक्ष सर जॉन साइमन थे। इसीलिए इस आयोग को साइमन कमीशन भी कहा जाता है। यह आयोग 1928 में भारत पहुँचा। इस आयोग में कोई भारतीय सदस्य नहीं था। इसीलिए यह आयोग जहाँ भी गया, काले झंडों से इसका स्वागत किया गया। कई स्थानों पर 'साइमन कमीशन, वापस जाओ' के नारे लगे। लाहौर में इन शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शनों को लाठियों के बल पर दबा दिया गया। सरकार ने इनका निर्दयतापूर्वक दमन किया। लाठियों के घातक परिणामों के कारण कुछ दिनों बाद लाला लाजपत राय के प्रदर्शनों को भी क्रूरतापूर्वक दबा दिया गया। सभी उग्रवादी दल

उन्होंने सरकार की इस नीति की निंदा की।

12. बोर्ड के मुख्य भागों का वर्णन करें।

सरदार सेवा संघ ठीकरीवाला के नेतृत्व में पंजाब प्रजा मंडल और फरस्ती प्रजा मंडल की उपलब्धियाँ नीचे दी गई तालिका के अनुसार हैं:

1. प्रजा मंडल आम लोगों और किसानों की समस्याओं पर चर्चा करने के लिए अपनी बैठकें आयोजित करता था।

2. उन्होंने फरास्त क्षेत्र में हो रहे अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठाई।

3. उन्होंने बाबा हीरा फासंग भिथल, तेजा फसंग सुतरन और बाबा सुंदर फसंग अफद की मदद से ब्रिटिश शासन का विरोध किया।

ग) निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 100-120 शब्दों में दीजिए:-

एक कविता में -

1. श्री गुरु रामथसिंह जी ने भारत की स्वतंत्रता के लिए क्या किया?

उत्तर- 1. श्री सतगुरु सिंह जी ने लोगों को प्रेरित किया और एक नए संगठन की नींव रखी। उनका उद्देश्य था

इसका उद्देश्य राजनीतिक क्षेत्र में सुधार करते हुए स्वतंत्रता प्राप्त करना था।

2. उन्होंने अंग्रेजों के प्रति अनाक्रमण की नीति अपनाई।

3. सरकारी डाक सेवाओं, विदेशी कपड़ों, सरकारी अदालतों, स्कूलों और कॉलेजों का बहिष्कार किया।

4. उन्होंने बिल्लियों को सैन्य प्रशिक्षण दिया।

5. मन की शांति रखने वाले सतगुरु रार सिंह जी ने 22 पृष्ठों में पुस्तक लिखी थी।

नरधारियों की यह कार्रवाई अंग्रेजों को भी भयभीत कर रही थी।

6. अंग्रेजों ने जगह-जगह बूचड़खाने खोले, लेकिन नरधारी लोग पशुओं का वध न करके गायों का वध करते थे।

7. श्री सतगुरु रार सिंह एक महान नेता थे जिन्हें सरकार द्वारा हर तरह से प्रताड़ित किया गया था।

यह तब तक जारी रहा जब तक देश स्वतंत्र नहीं हो गया।

2. स्वतंत्रता के बाद आर्य समाज ने पंजाबी लोगों के जीवन में क्या पाया?

उत्तर: सरस्वती आर्य सरज देबानी घोड़े के मालिक थे। उन्होंने 1875 ई. में आर्य सरज का निर्माण कराया था।

आर्यसराज को राजनीतिक और धार्मिक क्षेत्रों के साथ-साथ स्वतंत्रता संग्राम में भी बड़ी ताकत मिली:

1. आर्यसराज ने अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी और स्वदेशी आंदोलन बनाने के लिए स्कूल और कॉलेज खोले थे।

2. सवारी की देवी सरस्वती ने मंदिर में भक्तों की लगन जगा दी।

3. अश्व की देवी सरस्वती ने भारतीयों को अपने देश पर शासन करने के लिए प्रेरित किया। इसका प्रभाव

उन्होंने प्रभु से प्रार्थना भी की। लाला लाजपत राय, स्व. अजीत सिंह और श्रद्धा निंद जैसे देशभक्त भी आर्य सराज में शहीद हुए।

उपहार हैं।

4. आर्यों की राजनीतिक गतिविधियों को देखते हुए ब्रिटिश सरकार ने आर्यों के विरुद्ध कार्रवाई की।

मेरी दृष्टि कम होने लगी।

5. उन्हें उनकी आवश्यकता के अनुसार कोई सरकारी नौकरी नहीं दी गई, लेकिन फिर भी आर्य सराजी अडिग रहे।

6. आर्य सराजीयन के समाचार पत्र पंजाब के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भी सक्रिय रहे।

3. गदर पार्टी ने स्वतंत्रता के लिए क्या किया?

उत्तर: गदर पार्टी की स्थापना 1913 में सैन फ्रांसिस्को में हुई थी। इसका नेतृत्व बाबा सोहन सिंह भकना ने किया था। इस संगठन ने सैन फ्रांसिस्को से एक साप्ताहिक समाचार पत्र 'गदर' का प्रकाशन शुरू किया।

संसार का रचयिता सिंह सराभा है।

इस अखबार के कारण ही इस संगठन का नाम 'गदर पार्टी' पड़ा।

इस संगठन का उद्देश्य सशस्त्र विद्रोह के माध्यम से भारत को स्वतंत्र कराना था। इसलिए इस दल ने निम्नलिखित समूह बनाए:

उठाए जाने वाले कदम सुझाएँ:

1. सेना में विद्रोह के विचार।
2. ब्रिटिश सैनिकों की हत्या करना।
3. जेल से भागना।
4. सरकारी खजाने और पुलिस स्टेशन लूट लिए गए।
5. क्रांतिकारी साहित्य का मुद्रण और वितरण।
6. इंग्लैंड के शरणार्थियों की मदद करना।
7. हथियार इकट्ठा करना.
8. चित्र बनाना.
9. रेलवे, डाक और तार नुकसान पहुँचाना और तोड़ना।
10. क्रांतिकारियों का झंडा फहराना।
11. क्रांतिकारी युवाओं को तैयार करना। ग़दर पार्टी का नेतृत्व रास ताबरी बोस

ने किया था। रास ताबरी बोस ने विभिन्न स्थानों पर प्रचारक भेजे और सैनिकों को विद्रोह के लिए तैयार किया। करतार सिंह सराभा ने 'ग़दर' को दबाने के लिए दबाव की रणनीति अपनाने विद्रोह की कोशिश की, लेकिन असफल रहे। फिर भी, उन्होंने 'ग़दर जी' स्वतंत्र भारत के लिए एक झंडा तैयार किया गया, जिसे करतार सिंह सराभा ने हर जगह फहराया। वही हुआ। 46 क्रांतिकारी अप्रभावी रहे। फाँसी हुई। कई क्रांतिकारियों को लंबे समय तक जेल में रखा गया। लेकिन अंततः,

4. कोमागाटा मारुजाज़ा आपदा का वर्णन करें।

उत्तर: ब्रिटिश सरकार आर्थिक कानूनों की तलाश में विदेश गई थी। इस नाम का इस्तेमाल ज़बी के लोगों को क़त्ल के लिए मजबूर करने के लिए नहीं किया गया था। इसीलिए ज़बी के लोग अपनी जीविका कमाने में असमर्थ थे। पंजाब के लोग भी मदद मांग रहे थे। लेकिन पंजाब सरकार ने अगले साल तक एक भी कानून पारित नहीं किया। केवल वे भारतीय लोग ही दरगाह जा सकेंगे जो अपने देश को कोई कर नहीं चुकाते। 24 जनवरी 1913 को कनाडा के उच्च न्यायालय ने भारतीयों पर लगे प्रतिबंध को हटा दिया। लेकिन कोई भी शिपिंग ई: के कंपनी ऐसा नहीं कर सकी।

व्यवहार से डरकर पंजाबी यात्री ट्रेन से उतरने की ज़िम्मेदारी नहीं लेहे थे। उस सरेंटपिंड सरहाली के पिता गुरतादत्त सिंह ने जापान से करगतारा जहाज़ किराए पर लिया था। करगतारा भारतीय यात्रियों को ले जा रहा था।

में असमर्थ रहे। जहाज को वैकूवर बंदरगाह पर पहुंचना था, लेकिन यात्री 23 जून 1914 को बंदरगाह पर उतरने भारतीयों ने अंततः वापस जाने का निर्णय लिया। 23 जुलाई, 1914 ई. वांकवार से भारत के लिए कारागातार जहाज

जहाज़ वापस चला गया। जब जहाज़ हुगली जलडमरूमध्य पर पहुँचा, तो लाहौर का अंग्रेज़ डिप्टी कमिश्नर वहाँ आ पहुँचा। जहाज़ को बिजबिजघाट पर रोककर यात्रियों की तलाशी ली गई और यात्रियों को बताया गया कि उन्हें वहाँ से ट्रेन से भेजा जाएगा। फिर उन्हें उतार दिया गया और शार सुर रेलवे स्टेशन पर बिठा दिया गया।

पुलिस ने उन पर गोलियां चलाई, जिसके परिणामस्वरूप 40 लोग मारे गए और कई घायल हो गए।

5. झालावांवाला बाग में हुई दुर्घटना का वर्णन कीजिए।

उत्तर: 13 मार्च, 1919 को महात्मा गांधी ने रॉलेट बिल को विफल करने के लिए हड़ताल की। परिणामस्वरूप, पंजाब के कुछ शहरों में दंगे भड़क उठे। बिगड़ते हालात को काबू करने के लिए डिप्टी कमिश्नर ने राज्य के दो प्रसिद्ध नेताओं को गिरफ्तार कर लिया। जब शहरवासियों को उनकी गिरफ्तारी के बारे में पता चला, तो डॉ. सफियापाल और डॉ. फकचल जैसे लोगों के एक समूह ने शांतिपूर्वक डिप्टी कमिश्नर के घर पर धावा बोल दिया। लेकिन वे लोग

हॉल के दरवाज़े के बाहर रास्ता बंद कर दिया गया। अंग्रेज़ सैनिकों ने उन पर गोलियाँ चलाई। कई लोग घायल हुए। अशांति और गुस्से के माहौल में, अमृतसर और पंजाब से लगभग 25,000 लोग 13 अप्रैल, 1919 को ईद के दिन, जाफलावाले बाग़ में एक रैली के लिए इकट्ठा हुए। जनरल डायर ने प्रदर्शनकारियों को अहिंसक बताया।

कान समझौते पर हस्ताक्षर हो गए। जब जाफलाहीवाले बाग में रैली चल रही थी, जनरल डायर अपने 150 सैनिकों के साथ जाफलाहीवाले बाग के द्वार में घुस गया। बाग में प्रवेश करने के लिए केवल एक संकरा रास्ता था। जनरल डायर उस रास्ते के सामने खड़ा हो गया और लोगों को तीस मिनट के भीतर तितर-बितर होने का आदेश दिया, जो असंभव था। जनरल डायर ने तीस मिनट बाद गोली चलाने का आदेश दिया। लगभग 1,000 लोग मारे गए और 3,000 से ज़्यादा लोग घायल हुए।

गया।

6. अहल्या लखतर ने भी किस स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया था?

उत्तर: 1. सिखों के प्रयासों से 16 नवंबर, 1920 ई. को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक समिति अस्तित्व आई और 14 दिसंबर, 1920 ई. को शिरोमणि अकाली दल अस्तित्व में आया।

2. अकाली जप्यों ने महंतों से गुरुद्वारे खाली करवाने का काम शुरू कर दिया।

3. अंग्रेजों ने दरबार साहब अमृतसर गुरुद्वारे की चाबियाँ अपने कब्ज़े में ले लीं। सिखों ने इस कदम विरोध किया।

4. टाटा ने कई सिखों को बंदी बना लिया। उन्हें कड़ी सज़ाएँ दी गईं। अंततः अंग्रेजों को सिखों के आगे झुकना पड़ा और गुरुद्वारे की चाबियाँ गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को सौंप दी गईं।

5. अकाली दल के गुड़ का बाग मोर्चा को भी शांतिपूर्ण तरीके से पराजित कर दिया गया।

6. गुरुद्वारे में बैठे महंतों और पुस्तों से मुकाबला करने के लिए बिबर अकाली लफर का जन्म हुआ।

7. बिबर अकालियों का मुख्य उद्देश्य मुखबिरों और सरकार की पीठ में छुरा घोंपने वालों को खत्म करना था।

8. बिबर्स उन्हें विश्वास था कि यदि सरकार के मुखबिरों को खत्म कर दिया जाए तो ब्रिटिश सरकार हार जाएगी और भारत छोड़कर वापस चला जाएगा।

9. बिबर्स की पफल्स के साथ भी कई मुठभेड़ें हुईं।

10. यद्यपि बिबार लहर शांत हो गई है, परन्तु इस लहर ने पंजाबियों को देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति देने के लिए प्रेरित किया है। 7. विजय मोर्चे की कहानी लिखिए।

उत्तर: नाभा के महाराजा फर्जुदमन संघ ने गुरुद्वारा रकाब गंज के मोर्चे में सिख समुदाय का समर्थन किया। इससे देश और राष्ट्र में उनकी प्रतिष्ठा बढ़ी। महाराजा की प्रतिष्ठा और प्रतिष्ठा में वृद्धि ब्रिटिश सरकार को अच्छी नहीं लगी। इसलिए, अंग्रेजों ने महाराजा नाभा के खिलाफ कई मुकदमे दायर किए और महाराजा फर्जुदमन संघ को गद्दी से उतार दिया। महाराजा नाभा को गद्दी से उतारने से सिखों में भारी रोष फैल गया। सिखों ने विरोध ब्रह्म दिन मनाने का फैसला किया। जैतो में भी एक दीवान का आयोजन किया गया। 13 सितंबर, 1923 ई. को पुलिस ने जैतो के गुरुद्वारा गंगसर पर कब्जा कर लिया। उस समय गुरुद्वारे में अखंड पाठ हो रहा था और उस रास्ते को नष्ट कर दिया गया। सिखों ने अंग्रेजों का सामना करने के लिए वहां अपना मोर्चा बना लिया। यह देखकर कि मोर्चा लंबा होता जा रहा है, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने पाँच-पाँच सौ लोगों के जत्थे भेजने का कार्यक्रम बनाया। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने जत्थेदार उधम संघ नागोके के नेतृत्व में पाँच सौ सिखों का पहला जत्था भेजा। जब जत्था गुरुद्वारा गंगसर से एक मील दूर था, तो ब्रिटिश सरकार जेत्थे पर गोलियों की बौछार शुरू कर दी। लेकिन संघ पीछे नहीं हटा। संघ के कई शहीद हुए। जैतो मोर्चा दो साल तक चला। 1925 के अंत में, सरकार ने

गुरुद्वारा अधिनियम पारित हुआ और अकालियों की जीत हुई।

सामने का हिस्सा खत्म हो गया था।

8. भारतीय सेना पर एक विस्तृत टिप्पणी लिखें।

सुभाष चन्द्र बोस ने फासंगपुर से भारतीयों को एकत्रित किया और नवम्बर 1943 में 'आजाद फहिंद फौज' की स्थापना की।

2. इस समूह में अनेक पंजाबी देशभक्त थे।

3. इस सेना का मुख्य उद्देश्य अंग्रेजों को भारत से बाहर निकालना था।

4. इसीलिए सुभाष चंद्र बोस ने भारतीय युवाओं से बलिदान मांगते हुए कहा था - 'आप मुझे मौका नहीं देते,

मैं तुम्हें आजादी दूंगा।'

5. जापान ने स्वतंत्र भारतीय सेना को समर्थन का आश्वासन दिया।

6. लेकिन द्वितीय विश्व युद्ध में जापान की स्थिति कमजोर हो गई।

7. मई 1945 में ब्रिटिश सेना ने रंग पर कब्जा कर लिया। आज़ाद फ़हिंद फ़ौज के सैनिक हताश होकर,

समर्पण

ऐसा करना ठीक है।

8. यद्यपि यह लहर सफल नहीं रही, फिर भी इसने देश की स्वतंत्रता में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

संयोजक: हरिद्वंदर संघ (राज्य संसाधन व्यक्ति, सामाजिक विज्ञान) एससीईआरटी पंजाब,

रणजीत कौर (लाख इफ्ताहास) एस.एस.एस.एस. स्कूल एल. छीना बेट, गुरदासपुर और

मनदीप कौर (एस.एस. फेमस्ट्रेस) एस.के.एस.एस.एस. दाखा लुफधाना.